भक्त हृदय के उद्‌गार..

गर राम मिलन की चाहना है,
मन प्रेम बुहारी सों साफ करो।

निर्मल मन जब यह हो जाये,
आवाहन राम का आप करो।।

मन्दिर है कौन सा इस जहान में,
राम को जहाँ बुलायें हम।

वह ही बस मन्दिर हो जाये,
जहाँ राम को अब से पायें हम।।

तेरे तन में वह ही बसा हुआ,
तेरे मन में वह ही बसा हुआ।

तम सों आवृत हुआ तो ही,
वह तुझको न दीख पड़ा।।

देख हे मन वह श्याम तेरा,
तव 'मैं' कारण है दबा हुआ।

उस राम को ऐ मूर्ख मनवा,
अपवित्र स्थान में धरा हुआ।।

तुम ही कहो किस जल धोऊँ,
मम अन्धियारा सब दूर हो।

विषय वासना समूह का,
अज्ञान यह सारा दूर हो।।

- परम पूज्य माँ

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता, द्वितीय अध्ययन ९/२

(२६.८.१९६६)

अनुक्रमणिका

१. भक्त हृदय के उद्‌गार..

३. करवाते भी स्वयं हैं..
आपको उदार हृदय भी दे देते हैं..
श्रीमती पम्मी महता

७. ..बीज से वृक्ष रे फूट गया,
और पुनः वा में रे लय हुआ!
'मुण्डकोपनिषद्', द्वितीय मुण्डक १/४

११. आंतरिक खोज तथा रास तत्व
सुश्री छोटे माँ

१५. 'नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा'
परम पूज्य माँ से 'पिताजी' के प्रश्नोत्तर

२१ तू तो सब कुछ जानो राम,
अब आके पथ दिखला दो राम..
प्रस्तुति - श्रीमती शान्ता

२४. जग साज शृंगार
प्रस्तुति - विष्णु प्रिया महता

२८. ज्यों ज्यों जानेगी निज को,
जानेगी तू कुछ भी नहीं..
श्रीमद्भगवद्गीता ,
द्वितीय अध्ययन, १३/७-८

३५. अर्पणा समाचार पत्र

३९. कृतज्ञतापूर्ण ऋण..
जिसे कभी चुकाया नहीं जा सकता!

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा जून २०२१ को प्रकाशित तथा
सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

करवाते भी स्वयं हैं..
आपको उदार हृदय भी दे देते हैं..

श्रीमती पम्मी महता

परम पूज्य माँ के साथ श्रीमती पम्मी महता, उनकी मम्मा एवं अर्पणा के अन्य सदस्य

हे श्री हरि माँ प्रभु जी, आप माँ के जीवन का विस्तार ही तो आपका चरणामृत है! कैसे नहीं भायेगा हर मन को.. हरदिल अज़ीज़ जो है! हर कोई आप ही के चुम्बकीय आकर्षण की ओर सहज ही खिंचा चला जाता है।

आपका व्यक्तित्व एक गहरे समंदर की तरह है। सारा संसार इस प्यार को निरन्तर पाते हुये धन्य धन्य हुआ रहता है। हर एक व्यक्ति आप में इतना अपनत्व पा जाता है कि आपकी मीठी मीठी प्यार भरी आग़ोश में आना चाहता है। कितने आत्मीय लगते हैं आप! आप श्री हरि माँ जीवन का आनन्द जो हैं तभी तो इस क़दर मनभावन हैं।

आपके जीवन की कसौटी ही विलक्षण है। अपने आप में किस क़दर मुकम्मल हैं आप.. अपने आप में ही परिपूर्ण हैं.. इसी लिए तो हम अधूरे-सधूरे आप ही में पूर्ण होने

को एक उम्मीद का चिराग़ जलाये रहते हैं। यह उम्मीद जन्म से ही आप संग जुड़े रहने की है! ज़ाहिर है, हम सब आप ही का तो संकल्प हैं। सच माँ प्रभु जी, जीवन की कसौटी पर आप किस क़दर.. अपनी भव्यता में अलग ही दीखते है। अपने जीवन की दिव्यता में आप कितनी विलक्षणता, सुन्दरता व अलौकिकता लिए हुये हैं!

इतने साधारण दीखने वाले किस क़दर असाधारण हैं, कितने सरल हैं आंतर की गहराइयों तक! तभी तो प्यार ही प्यार बहता जाता है सभी के लिए! आपका प्यार सभी में एक सा बंटा हुआ है.. सभी के लिए वह आपकी आँखों से झलकता है। आप व आपका प्यार तो इस क़दर विशाल हैं कि उसी विशालता में ही आप कृपालु दयालु प्रभु के दर्शन कर पायें तो ही आपके जीवन की सत्यता का परम आनन्द ले पायेगी यह जगती!

हे दीनानाथ दिनेश, आप की चरणरज सीस चढ़ाते हुये यही करबद्ध प्रार्थना करती हूँ कि हम सभी आपकी धरा पर हो रही प्रकट लीला का हर पल उत्सव मनाते हुये जीयें.. ऐसे ही हो पायें.. जो आप कृपालु दयालु माँ प्रभु जी की चरणरज को सीस चढ़ा कर उसी में सिमट आयें!

धन्य हैं आप हे श्री हरि माँ, जिन्होंने इस धरा पर अवतरित हो कर हमें हमारी पहचान का परम सौभाग्य दिया हुआ है! हम आत्मा हैं.. और आप परमात्मा से मिलने का यह ही अद्वितीय अवसर है। हे कृपालु नाथ, हमें अपने से ही सनाथ रखियेगा जो इक रोज़ हम आप ही के सम हो जायें! आमीन।

जगती इक रोज़ आपका अवश्य ही आभार मानेगी.. हम मानस की जात, सत्यार्थ प्रकाश को प्रकट होने से कभी रोक सकते हैं भला! कभी अंधेरे भी उजालों को रोक पायें हैं.. वह अनन्त प्रकाश तो फैलेगा ही फैलेगा!

जिसका जीवन गंगा प्रवाह है व जिसे आपने 'उर्वशी' नाम दिया हुआ है भला वह किसी सीमा में बंध सकती है! आंतर का प्रवाह है जो आपका.. वह सभी को पावन कर देने वाला है! उसने तो युगों युगों के लिए राह बना दी है, जिस पर चल कर पूर्ण की पूर्णता में यह जगत विराम पा सकता है।

कैसा जीवन है आपका! सभी के दुःख-दर्द समेट कर अपने में, आप सभी को अपनी दैवी सम्पदा से अलंकृत करते जाते हैं। आप तो अपने लिये कुछ भी बचा कर नहीं रखते.. अपने समेत अपना सभी कुछ बाँट देते हैं!

फिर इस युग की माँग भी है और वक्त की भी.. अप्रत्यक्ष, प्रत्यक्ष यही तो माँग है.. और आप जगद्जननी श्री हरि माँ ने अवतरित हो कर आशा का दीप तो जला ही दिया है। न जाने, कब सारा विश्व इस ज्योत्सना के भव्य दर्शन कर पायेगा! आप ख़ुदा की मेहर का ही सदक़ा होगा.. यह तभी हो पायेगा।

आप की नवाज़िशें किस किस रूप में मेहरबां हो कर उतरेंगी हे माँ, आप से ज़्यादा इस सच्चाई को कौन जान सकता है.. ईश्वर करे, इबादत में उठे हाथ सदा उठे रहें और आपके सजदे में झुका सर कभी उठे ही नहीं! मेरे लिए तो आप ही भगवान हैं माँ!

आपको कंकरों से तो तोला ही नहीं जा सकता.. आपको धन की कितनी आवश्यकता है, यह तो हम सभी जानते हैं.. परन्तु सब कुछ इस जगती के कल्याण अर्थ! आप उदासीन व संन्यासी, अपने लिए क्या माँगेंगे.. मगर उस जगत में जीने के लिए जीव-जगत को धन तो चाहिये ही.. 'जहाँ दाता एक राम हों और भिखारी सारी दुनिया', फिर आप प्रभु माँ ही तो इस संसार को सुन्दर बनाते हैं। सेवा के लिए भी धन चाहिए.. दुःखियों का दर्द मिटाने के लिये भी धन आवश्यक है।

अस्पताल चलाने के लिये भी धन चाहिये.. धन तो अनिवार्य अंग है सेवा का! अगर हम सभी मिल कर इसमें सहयोग दे पायें तो इसमें हमारी ही भलाई है। सौ हाथ देंगे तो ही तो दस हज़ार भूखे पेट रोटी पा सकेंगे.. तो क्या यह हमारा महत्त्वपूर्ण सहयोग नहीं?

धन तो अनिवार्य
अंग है सेवा का..

अस्पताल चलाने के लिये
भी धन चाहिये..

आपके हर पहलू से प्यार को जी-जान से उठा पाने की सदा क्षमता दिये रहियेगा..
जो जीवन रूपी चादर पर आपकी दैवी सम्पदा के मोती जड़े रहें!

आप माँ कहते हैं कि आपकी नेक कमाई का यह छोटा सा हिस्सा कितना बड़ा व महत्वपूर्ण योगदान है। इस तरह की कमाई करने का भगवान जी की कृपा से अवसर मिले तो इसमें हमारी ही भलाई निहित है.. क्योंकि सेवा का अवसर तो हमें किसी और ने ही दिया है!

धन्य हैं वह, जिन्होंने हम में दया जगा दी! माँ कहा करते थे, "कोई धन से सेवा कर सकता है.. तो कोई तन मन से। जो भी हम कर सकते हैं उदारता से और प्यार से करना चाहिये! किसी के आँसू पोंछ कर जो दिल को सुकून मिलता है, उसके तो कहने ही क्या!"

प्यार की अपनी लूट में आप परम पूज्य श्री हरि माँ जो भी देते हैं वही हमारा परम सौभाग्य है। करवाते भी स्वयं हैं.. आपको उदार हृदय भी दे देते हैं! विनम्रता का दिव्य प्रसाद मिलता है। जो जो भी मिले स्वयं प्रभु माँ से, तो दामन फैला कर क़बूल कर लेना चाहिए! न जाने जीवन में फिर यह अवसर मिले न मिले!

हम मानस की जात ही ऐसी है कि मिला हुआ अवसर अपने अहम् के कारण हम खो देते हैं। आप भगवान जी ने तो हमें अपने भाई-बन्धुओं से केवल share कर पाने के लिए ही दौलत बख़्शीश करी है। बस, हम यही कर पायें व आपसे मिली हर शै को नतःमस्तक होई उठाना आ जाये.. यही तहेदिल से मंगलयाचना बारम्बार करती हूँ!

कितना दिव्य व अनमोल उपहार है आप माँ का, हमारे जीवनों को! ईश्वर करे, इसी प्रसाद आपके का विस्तार हो हमारे हृदयों में.. तभी तो यह दैवी सम्पदा स्थाई रूप धारण कर पायेगी। जिन हाथों ने हमारे हाथ थामे हुये हैं, ईश्वर करे वह कभी भी आपसे विलग न हों.. क्योंकि युगों-युगों से जो वियोग होता आया है कभी न लौटे इस जीवन में!

यही एक तहेदिल से प्रार्थना है कि वियोग का बहुत दुःख पा लिया.. अब मिलन के इस संयोग को आपका जो आशीर्वाद प्राप्त है, उसे न खोऊँ! किसी भी कीमत पर नहीं! इल्तिजा भी है मेरी और याचना व प्रार्थना भी!

इसपे हे नाथ, रहमत अपनी बनाये रखना.. जो आपसे विलग होने या रुख़सत होने की बेला कभी भी इस दिल पे दस्तक न देने पाये! युगों का अंतराल, मिलन के इस एक पल में ही विलीन कर लीजियेगा हे नाथ, जो आप ही आप से सनाथ हुई रहूँ! हे माँ, यूँ ही भगवद् कृपा, इस कनीज़ आपकी को मिली रहे! आमीन

आपके हर पहलू से प्यार को जी-जान से उठा पाने की सदा क्षमता दिये रहियेगा.. जो जीवन रूपी चादर पर आपकी दैवी सम्पदा के मोती जड़े रहें!

हरि ॐ तत्त सत्त

❖ ❖ ❖

..बीज से वृक्ष रे फूट गया,
और पुनः वा में रे लय हुआ!

अग्निर्मूर्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ दिशः श्रोत्रे वाग् विवृताश्च वेदाः।
वायुः प्राणो हृदयं विश्वमस्य पद्भ्यां पृथिवी ह्येष सर्वभूतान्तरात्मा।।

मुण्डकोपनिषद - २/१/४

शब्दार्थः

इस परमेश्वर का अग्नि मस्तक है; चन्द्रमा और सूर्य दोनों नेत्र हैं; सब दिशाएँ दोनों कान हैं; और विस्तृत वेद वाणी है तथा वायु प्राण है; जगत हृदय है; इसके दोनों पैरों से पृथ्वी उत्पन्न हुई है; यही समस्त प्राणियों का अन्तरात्मा है।

तत्व विस्तारः

देख्र यहाँ दर्शाये हैं, सगुण निर्गुण में भेद नहीं।
एक तत्व अखण्ड रस, में होये विच्छेद नहीं।।१।।

ब्रह्म कहें हिय लोक को, मनोखिलवाड़ भी कहें।
मौन लोक रे यह ही है, कर्माशय भी इसे कहें।।२।।

हिरण्यगर्भ रे वा मन है, सुषुप्ति में वह लय होये।
हिरण्यगर्भ बीज उपजे, पुनः कारण में लय होये।।३।।

विराट रूप वा विश्वरूप, यहाँ पे हैं दर्शा रहे।
समष्टि कोण व्यष्टि कोण, दोनों हैं बता रहे।।४।।

विष्णु रूप इक सार वही, राम तत्व रे वह ही है।
विष्णु तत्व वह रमण तत्व, गौरांग तत्व रे वह ही है।।५।।

अक्षर अव्यक्त निराकार, स्वरूप तत्व तो कह आये।
अमूर्त अमन अजन्म रूप, सर्वाधार तो कह आये।।६।।

दृष्टा जगत विराट रूप, विश्वरूप की कहते हैं।
स्वयंभू विभु परम के, प्रकट रूप की कहते हैं।।७।।

अग्न है मस्तक परम की, चाँद सूर्य दो नेत्र कहें।
दिशाओं को वह कान कहें, वेदन् को वाणी कहें।।८।।

छंद ऋचायें भाषा हैं, वायु वा के प्राण कहें।
जगत दृश्य वा का रे कहें, पद भूलोक जन्म दे कहें।।९।।

समस्त प्राणिन् का उसको, अंतरात्मा रे कहते हैं।
सर्वात्म वह सर्व रूप, विश्वात्म रे कहते हैं।।१०।।

अधिष्ठाता देव हर अंग का, सामने धरते रहते हैं।
व्यष्टि ही रे समष्टि है, यह ही यहाँ दर्शाते हैं।।११।।

दिशायें देख कहें श्रोत इसकी, ध्वनि गूँज रे दिशा की है।
पृथ्वी पाद रे उसके हैं, पृथ्वी पर है जगत खड़ा।।१२।।

शक्तिप्रद देवन के, नाम यहाँ पर कह दिये।
अखण्ड शक्ति विभाजित कर, भिन्न नाम रे कह दिये।।१३।।

हृदय ही उसका जगत कहें, एक सत् वह आप है।
सर्वाधार सर्वाधिष्ठान, सत्ता सम वह आप है।।१४।।

समष्टि व्यष्टि दोनों रूप, सत् स्वरूप वह आप हैं।
सर्वभूत अंतरात्मा, एक आधार वह आप हैं।।१५।।

परम बिना है कुछ नहीं, बार बार समझाते हैं।
अखण्ड सत् वह ही है, विविध विधि बताते हैं।।१६।।

स्थूल रूप यह जग सारा, महाभूत रे वह ही है।
जिसे विश्व कहो विराट कहो, एक तत्व रे वह ही है।।१७।।

महाभूत वह तन्मात्रा भी, प्रकृति भी रे वह ही है।
अनेक रूप कहें वह धरें, अरूप रूप सब वह ही है।।१८।।

अखण्ड सत्ता बार बार, देख कहें रे वह ही है।
जो देखे जहाँ देखे, पूर्ण कह दें वह ही है।।१९।।

किसी विधि तो समझ सके, इस कारण तन का रूप वह दें।
तन की भाषा तू समझे, इस कारण जग को तन ही कहें।।२०।।

वहाँ तो तन की बात नहीं, मिथ्यात्व जग का कह आये।
सब हो के है कुछ नहीं, बार बार वह कह आये।।२१।।

विराट रूप यह विश्वरूप, यह स्थूल रूप की कहते हैं।
पृथ्वी लोक यह माया लोक, यह वृक्ष फल की कहते हैं।।२२।।

या कह दूँ यह वृक्षण का, विस्तार यहाँ पर कहते हैं।
किस विध क्योंकर वह फैले, हंस हंस कर कहते हैं।।२३।।

पूर्ण अंग रे उसके ही, बस इतना ही वह कहते हैं।
पूर्ण रूप रे उसके हैं, रूप धरी धरी कहते हैं।।२४।।

तनो रूप उत्पत्ति की, स्थूल रूप की कहते हैं।
याद रहे वह तम लोक की, जड़ लोक की कहते हैं।।२५।।

दृश्य जग जो दीखे है, कर्मन् का परिणाम है।
या कह लूँ इक बीज के, वृक्ष का यह ही नाम है।।२६।।

बीज में पूर्ण है दिया, क्या किस विध रे क्या होगा।
कौन लोक को' रंग रूप, कौन पुष्प उत्पन्न होगा।।२७।।

तो कहो क्या बीज ने कर्म किया, या कहूँ रे वृक्ष ने धर्म किया।
बीज से वृक्ष रे फूट गया, और पुनः वा में रे लय हुआ।।२८।।

ब्रह्माण्ड वृक्ष की बात कहें, बीज ब्रह्माण्ड का आप भये।
पूर्ण जग जो देखा है, कहें बीज वह आप धरे।।२९।।

फिर कहें बस बीज नहीं, हर रूप धरी वह ही आये।
तन यह जग रे उसका है, परमेश्वर जो कहलाये।।३०।।

पर याद रहे इक तन की नहीं, उपमा यहाँ पे देते हैं।
परिवर्तनशील यह तन रे है, विनाशवान कहे देते हैं।।३१।।

अपने तन को देख ले, तू तो नहीं अपना सके।
तेरा है यह तुझसे है, यह नहीं कह पा सके।।३२।।

यह तेरा है चाहे कह ले, तू तो तन यह नहीं नहीं।
उसी विधि यह राम मेरा है, सब हो के यह नहीं नहीं।।३३।।

अग्न ही वा मस्तक है, शशि सूर्य वा नेत्र कहें।
दिशायें कान रे उसके हैं, विस्तृत वेद वाणी कहें।।३४।।

पर जड़ हैं जड़ मुख्र ने कहे, परम सत्व है बहु परे।
पूर्ण ज्ञान यह हो जाये, तो भी परम ना जान सके।।३५।।

याद रहे अरे तन जाने, तनो चिकित्सा जान भी ले।
कौन है तू तव अंग जान के, चिकित्सक जन ना जान सके।।३६।।

तन फोड़ फोड़ कर देख्न ले, रग रग कहाँ पे बहती है।
ना जाने यह मन तेरी, क्या कब कहाँ पे कहती है।।३७।।

याद रहे यह स्थूल तन, जड़ है इसको समझ ले।
भाव ज्यों शब्द बधित हुये, जान ले जड़ ही वह हुये।।३८।।

स्थूल रुप सब पढ़ पढ़ के, देख्न देख्न के देख्न भी लें।
स्थूल रुप की जान लें, पढ़ पढ़ के ना कह सकें।।३९।।

कारण की फिर क्या वह कहें, वह तो सबसे है परे।
बिन कारण में जा पहुँचे, उसको नहीं रे समझ सके।।४०।।

बाह्य कर्म सब जड़ ही हैं, पर देख्न कहें वह जड़ ही हैं।
संसरणा चेतन कहो, आन्तर मन चेतन ही है।।४१।।

यह चेतनता भी जानो, वह है जो है चित्र में।
चित्रपट पे चेतनता, जड़ ही है अरे चित्र में।।४२।।

वह भी निश्चित हेरे है, इक पल नहीं रे बदल सके।
राम रूप तू गर चाहे, उसको भी रे अब कह ले।।४३।।

जान जान कुछ ना जाने, जड़ संग अब छोड़ दे।
जो है सब कुछ वह ही है, यह जान के ही सब छोड़ दे।।४४।।

सूक्ष्म तन है रजोगुणी, साधक तू कह ले।
परम मिलन की राह है वह, रज रे उसको तू कह ले।।४५।।

सत्त्व की ओर रे गर बढ़े, पूर्ण जान वह जायेगा।
मिथ्या ज्ञान रे छोड़ दे, सत्त्व में समायेगा।।४६।।

बाह्य संग पूर्ण मिटें, अहम् नितान्त निवृत्त भये।
राम राम ही हो जाये, अमन हो करी स्थित भये।।४७।।

१०-९-६१

ॐ ॐ ॐ

आंतरिक खोज तथा रास तत्व

सुश्री छोटे माँ

अर्पणा पुष्पांजलि अंक दिसम्बर २००९

परम पूज्य माँ का इस जीवन में हमें मिलना ही जीवन का सर्वोत्तम प्रसाद है.. पूज्य माँ हमारे जैसे साधारण जीव बन कर ही धरती पर आये। आज जब पीछे मुड़ कर देखती हूँ, तो प्रत्यक्ष रूप में दर्शन होते हैं कि पूज्य माँ तो सभी के हैं.. और प्रत्येक व्यक्ति के साथ उनकी अपनी अलग अलग कहानी है।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अपनी माँग के अनुसार ही प्रसाद मिला। इसी कारण परम पूज्य माँ हँसते हुए यह गा देते *'ज़िन्दग़ी और कुछ भी नहीं, तेरी मेरी कहानी है'*। प्रत्येक जीव का अपना अपना निजी अनुभव होता है.. यही नहीं, अपना अपना दृष्टिकोण भी भिन्न होता है। हर इन्सान उसी प्रकार से ही, प्रत्येक परिस्थिति को देखता है। इसका रहस्य अब समझ में आ रहा है.. पूज्य माँ तो बड़े प्यार से, प्रत्येक जीव को उसके स्तर पर जाकर, विविध विधि से जीवन को देखने का ढंग सिखला रहे थे।

पूज्य माँ के दिव्य सम्पर्क का प्रसाद, राम जी की कृपा से गत ६० वर्ष से भी अधिक समय तक रहा। उन्होंने मेरे स्तर पर आकर उस नाते को शत-प्रतिशत निभाया। आज परम पूज्य माँ के चरणों में बैठ कर अपने दर्शन करती हूँ तो लगता है मैंने यह तो कभी सोचा ही नहीं था कि मैं अपने आप को जानती ही नहीं हूँ। मेरी अपनी ही मान्यताएं हैं, अपना ही संग मोह है.. जिसके जाल में फंसी हुई, मैं हर परिस्थिति को देखती हूँ।

परम पूज्य माँ की बहिन सुश्री निर्मल आनन्द, उनके भाई डॉ. ए के आनन्द,
उनकी पत्नी डॉ. इला आनन्द एवं अर्पणा के अन्य सदस्य भजन संध्या का आनन्द लेते हुए

अगर परम पूज्य माँ की दृष्टि से देखना चाहूँ, तो यह सत्यता, प्रत्यक्ष रूप में सामने प्रकट हो जाती है और स्पष्ट रूप में ज्ञात होता है कि हमारी भूल कहाँ पर हो रही है..

जब मैंने ट्रेनिंग कॉलेज में जाना आरम्भ किया, तो उस समय मैं मनोमन, इसी काल्पनिक दुनिया में विचरण करती रही कि 'पूज्य माँ पर तो केवल मेरा हक़ है, इन पर किसी और का कोई अधिकार नहीं..' इस भाव को मैं इतना सच मान चुकी थी कि मैंने यह तो कभी भी नहीं सोचा कि मैं किस नाते से परम पूज्य माँ पर अपना अधिकार समझती हूँ। इसी कारण कोई भी बात दिल में सोच कर, यही समझती थी कि पूज्य माँ को इसे पूरा करना चाहिये.. और यदि नहीं करते तो मैं उनके साथ नाराज़ हो जाती!

उस काल की अनेकों घटनायें हैं जहाँ मुझे अपने आंतर के दर्शन होते हैं। आज यही प्रत्यक्ष दीखता है कि मैं सच ही अपने आप को नहीं जानती थी। यदि जान लेती तो ज्ञात हो जाता कि मेरी अधिकार जमाने की कोई भी जगह नहीं बनती। धन्य हैं माँ! जिन्होंने मेरे स्तर पर आकर, जितनी भी मेरी चाहनायें पूरी कर सकते थे, उन्हें पूर्ण करते रहे.. और साथ ही साथ सत् दर्शन भी करवाते रहे।

मैं कॉलेज में प्रशिक्षण लेकर आ गई। वहाँ पर भी मेरा 'मैं' का अधिकार आरम्भ हो गया.. मेरा सारा व्यवहार, स्वार्थ के आधार पर ही होता था। इस काल में भी परम पूज्य माँ मेरे स्तर पर आकर प्यार से निभाते चले गये और साथ साथ मुझे आन्तर्मुखी होने के लिए भी प्रेरित करते रहे।

कोई इतना प्यार करे, यह तो मुझे बहुत ही अच्छा लगता था, परन्तु मैंने यह कभी सोचा ही नहीं कि मुझे जितना प्यार मिलता है, क्या यह मेरी कीमत है? मैं हर प्रकार से अधिकार का लाभ उठाती चली गई। पूज्य माँ मेरे कर्त्तव्य निभा रहे थे.. उन्होंने ऐसा कोई भी कर्त्तव्य नहीं छोड़ा, जिसे निभाना मेरा फ़र्ज़ बनता था। पूज्य माँ का एक-एक कर्म याद करते हुए सीस झुक जाता है। सच ही है -

'हम ऐसे.. तुम ऐसे प्रभु जी'

माँ! आपको याद करते करते मन गदगद हो उठता है। सच ही, मैं तो स्वार्थी, घमण्डी, अज्ञानी थी। सब कुछ परम पूज्य माँ से ग्रहण करती गई, कभी भी यह नहीं सोचा कि आँख खोल कर स्वयं को देख तो लूँ।

पूज्य माँ ने पूजाकाल के आरम्भ में, एक दिन मन्दिर में यह प्रश्न पूछ लिया "यह बता, भगवान से तू चाहती क्या है?" मैंने बिन सोचे समझे, यही कह दिया "जितना मान आपको मिलता है, मैं भी उतना ही मान चाहती हूँ।"

उस समय पूज्य माँ के पास कोई सत्संगी आये हुए थे, मेरा उत्तर सुन कर वह मुस्करा भर दिये। यह देख कर मुझे समझ आई और मन लज्जित सा महसूस करने लगा। पूज्य माँ ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया कि "सुशील ने राजा पिता से माँगा है, वह अवश्य ही पूरा कर देंगे।" अन्य भी कई प्रकार की परिस्थितियाँ आईं। वहाँ पर भी परम पूज्य माँ ने वह नाता पूर्णरूपेण निभाने का प्रमाण दिया।

उस काल में मेरा बाहर जाकर सत्संग कराने का विस्तार हो चुका था। मैं उसी में खोई हुई यही समझने लगी कि मुझे ज्ञान आ गया है.. मैं लोगों को जो भी समझा रही हूँ, उससे लोग बहुत प्रसन्न हो रहे हैं। तब परम पूज्य माँ ने हँसते हुए इतना ही कहा कि "तू अध्यापक तो सर्वश्रेष्ठ हो सकती है। यह तो केवलमात्र शब्द-ज्ञान है, ज्ञान तो जीवन को कहते हैं। जब वह जीवन को रंग देता है, तब जीव ज्ञान की प्रतिमा बन जाता है।" उस काल में तो मैं मानो अपने ज्ञान में ही खोई हुई थी कि ज्ञान का आ जाना ही पूर्ण ज्ञान है।

उस समय भगवान जी ने कृपा करी और मुझे मृत्युतुल्य रोग ने आ घेरा। बस फिर तो आगे से आगे रोग बढ़ता चला गया। भगवान जी की और परम पूज्य माँ की करुणा हुई जो उन्होंने मुझे कृपा करके कुछ समय और दे दिया ताकि मेरी आँख खुल सके।

मुझे कुछ समय तो मिल गया, परन्तु यह नहीं मालूम था कि परम पूज्य माँ, जो हमारे सर्वस्व, हमारे आधार हैं.. जिन्होंने हमारे जैसा साधारण रूप धारण करके, मुझे जीने का राज़, कर पकड़ कर प्रमाण सहित दर्शाया, वह स्वयं ही पूर्ण की पूर्णता में विलीन हो जायेंगे। यह तो सत्य है कि परम पूज्य माँ आज भी हमारे साथ हैं। आज उन्होंने साकार के स्थान पर निराकार रूप धारण कर लिया है।

पूज्य माँ साधारण बन कर रहे.. पूर्ण जीवन प्रमाण दिया, ऋतम्भरा प्रज्ञा प्रवाह का ज्ञान जो पावनी गंगा है, उनके श्री मुखारविन्द से बह निकला। पूज्य माँ ने कभी स्वप्न में भी उस प्रवाह को नहीं अपनाया। उस प्रवाह का 'उर्वशी' नाम भी परम पूज्य माँ के श्री मुखारविन्द से बह निकला। वास्तव में 'उर्वशी' तो एक मनमोहक अप्सरा थी, पूज्य माँ के पास ऋतम्भरा प्रवाह बन कर आई। उससे सावधान रहते हुए पूज्य माँ का जीवन ही दिव्य प्रवाह बनकर बहता रहा।

यह दिव्य 'उर्वशी' प्रवाह ही हमें जीवन में जीने की विधि के रूप में मिला। यही नहीं, जीवन में कैसे पूर्ण साधारणता में रह कर दिव्यता का रंग चढ़ सकता है, इसका साक्षात् रूप में प्रमाण परम पूज्य माँ ने दिया। मेरा पूर्ण जीवन शास्त्रों की प्रतिमा, परम पूज्य के प्रत्यक्ष दर्शन में व्यतीत हुआ।

जीवन पर्यंत इसी दिव्य-ज्ञान का साधारण जीवन में प्रसाद मिलता रहा। अब प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त होते हैं कि हम सब परम पावनी उर्वशी रूपी गंगा में चित्त को पावन कर सकते हैं। आज तक हम यही सुनते आये थे कि शास्त्र रूपा पावनी ज्ञान का लोप हो चुका है, यही भगवान कृष्ण ने कहा था। परम पूज्य माँ के द्वारा प्रवाहित ज्ञान और उनके जीवन के प्रमाण द्वारा हमें फिर उस 'लुप्त' ज्ञान के स्पर्श का अनुभव हुआ।

पूज्य माँ के प्रारम्भिक जीवन में इसी दिव्य दृष्टिकोण के दर्शन प्राप्त होते हैं। १९४८ से मुझे यही दर्शन हुए कि कैसे पूर्ण की पूर्णता में सबको प्यार करते हुए जीवन व्यतीत होता है। परम पूज्य माँ का स्वभाव सच ही अलौकिक था। क्या विद्यार्थी.. क्या सहकर्मी.. उन्हें सब ही हृदय से पूजते थे।

तत्पश्चात मैं जब पढ़ाने लगी तो मुझे प्रत्यक्ष रूप में समझ आने लगी कि माँ हम सबसे भिन्न हैं। प्यार का प्रमाण तो उनका जीवन है। मैं तो व्यर्थ ही गुमान में बैठी रही कि मेरे अपने में कुछ गुण होंगे जो वह मुझे इतना प्यार करते हैं..

जब पूज्य माँ के जीवन का तथाकथित पूजाकाल आरम्भ हुआ तो मैं उनके ही साथ रहा करती थी। ज्ञान की प्रतिमा का जीवन कैसा होता है इसका भी प्रसाद मिलता रहा। विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न प्रकार के लोग मिले, परम पूज्य माँ का सबके साथ अपना ही नाता रहा। इतने वर्षों से साथ रहते हुए आज जब पीछे मुड़ कर देखती हूँ, तो यही याद आता है कि पूज्य माँ के सम्मुख जैसी परिस्थिति आई, वह सदा आने वाले के तद्रूप होकर पूर्णरूपेण सेवा करते रहे।

आज परम पूज्य माँ के इस रूप में दर्शन करते हुए, भगवान कृष्ण के रास तत्व की याद आती है.. वहाँ पर भी हर गोपी को यही अनुभव होता था कि भगवान उसके अपने हैं। परम पूज्य माँ का नाता भी सबके साथ इसी प्रकार का है। प्रत्येक जीव यही अनुभव करता है कि पूज्य माँ उसके अपने हैं.. यही रास लीला का प्रसाद सबको पूज्य माँ की छत्रछाया में मिला। आज ऐसा प्रतीत हो रहा है कि भगवान की कृपा बनी रही तो रंग चढ़ ही जायेगा। ❖

‘नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा’

परम पूज्य माँ के बचपन का चित्र
परम पूज्य माँ के पिता जी, बीबी जी, उनके भाई बहिन एवं अन्य सदस्य

पिता जी

गीता के उपदेश के पश्चात् भगवान ने अर्जुन से पूछा, ‘क्या तुम्हारा अज्ञान से पैदा हुआ मोह नष्ट हो गया है?’ अर्जुन ने कहा :

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव।

श्रीमद्भगवद्गीता १८/७३

अर्थात् - ‘हे भगवन्! आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है और मैंने स्मृति को फिर से पा लिया है।’ यह मोह क्या था और वह स्मृति कौन सी थी जिसे अर्जुन ने फिर पा लिया?

सारांश

अर्जुन मोह तथा अज्ञानता के कारण भय तथा भीरुता से ग्रसित हो गया। अपना क्षत्रिय स्वभाव भूल कर वह रण से पिण्ड छुड़ाना चाहता था। भगवान की कृपा से उसके अज्ञान का नाश हुआ और वह पुनि अपने स्वभाव में स्थित हो गया। साधक के दृष्टिकोण से स्मृति स्वरूप की होती है और मोह के नष्ट होने से संग का नितान्त अभाव हो जाता है।

प्रश्न अर्पण

गीता ज्ञान सब कही करी, श्याम ने अर्जुन से पूछा।
अज्ञान और यह मोह तेरा, क्या पूर्ण ही सब नष्ट भया।।१।।

मोह नष्ट हुआ स्मृति मिली, संशयरहित मेरी स्थिति भई।
जो कहो तुम अब करूँ, अर्जुन ने यह बात कही।।२।।

को' मोह गया को' स्मृति मिली, अर्जुन पे कृपा यह कैसे हुई।
इसका राज़ अब समझाओ, कुछ नहीं हमें समझ पड़ी।।३।।

तत्व ज्ञान

अर्जुन स्थिति को प्रथम समझ, जिस स्थिति में उसको ज्ञान मिला।
निज स्वभाव को मोह बंधा, जब अर्जुन था भूल चुका।।४।।

रणभूमि में वह ठारा था, दुश्मन को भी पुकारा था।
अनेकों मित्रों नातन् का, संग कृष्ण का भी सहारा था।।५।।

विपक्ष उपस्थित नाते देख, वा सेना देख घबरा गया।
भूला क्षत्रियता मोह युक्त हुआ, विरुद्ध स्वभाव में आ गया।।६।।

ज्ञान विज्ञान वह सब भूला, इतना वह घबरा गया।
भावना राही रण त्याग को, समर्थन ज्ञान कहने लगा।।७।।

कृष्ण ने तब ललकार लिया, सखा ने उसे पुकार लिया।
कायर न बन मूर्ख तू, कही संशय उत्पन्न किया।।८।।

किम्कर्त्तव्यविमूढ़ भई, अर्जुन चरण में जाये गिरा।
कहा कृष्ण से 'स्वभाव मेरा, कायरता ने है हर लिया।।९।।

धर्म अधर्म मैं भूल गया, विधि समझ मुझे न आये।
शरणापन्न हूँ शिष्य तेरा, तुम कहो समझ कुछ आ जाये'।।१०।।

निज अज्ञान मोह जाती, अभिमान तजी जो चरण पड़े।
श्याम से पूछे क्या वह करे, श्याम वा कर थाम लें।।११।।

मोह कारण स्वभाव भूला, क्षत्रियपन निज भूल गया।
शूरवीर पराक्रमी वह, निर्बल भीरु हो गया।।१२।।

ज्ञान दिया भगवान ने, पुनि स्वभाव में स्थित हुआ।
निज कर्त्तव्य जो भूला था, उसमें जा प्रवृत्त हुआ।।१३।।

स्मृति स्वरूप की नहीं हुई, ब्रह्म में स्थित वह नहीं हुआ।
उसे श्री विजय विभूति मिली, ध्रुव नीति से यह सब हुआ।।१४।।

निहित चाह वास्तविक चाह, को पूर्ण भगवान करें।
चाह पूर्ण जिस पल कर दें, फिर पुनि वह मौन होयें।।१५।।

ज्ञान-विज्ञान सहित

महाज्ञान दिया श्याम ने, ज्ञान स्वरूप वह नहीं हुआ।
निर्मम और निरहंकार, सत् स्वरूप वह नहीं हुआ।।१६।।

कर्तृत्व भाव भी नहीं गया, वह प्रेम स्वरूप भी नहीं हुआ।
मोह पूर्ण विचलित था मन, इस परिस्थिति से मोह हटा।।१७।।

उस पर मोह जो छाया था, उस पल निज को भूला था।
उसको उसने याद किया, अपना आप जो भूला था।।१८।।

इतना ही तो काज था, जो श्याम ने उसे मना लिया।
जिस कारण वह भूला था, वह कारण भी बता दिया।।१९।।

परिणाम मोह का क्या होगा, यह भी उसे सुझा दिया।
मनोरमणी मनोवर्ती को, पूर्ण ज्ञान बता दिया।।२०।।

उस पल कहा जो श्याम ने, वहाँ पूर्ण ज्ञान था भरा हुआ।
जो भी उसको मानेगा, पूर्णता में ही समायेगा।।२१।।

पर अर्जुन ने उस पल के लिये, मानो ज्ञान वह मान लिया।
क्षत्रिय धर्म जब याद आया, युद्ध में वह तत्पर हुआ।।२२।।

इसी विधि हे मन मेरे, सुन कर बुद्धि चाहे मान ले।
मत समझो तू मन मेरे, जो बुद्धि कहा वही हो गये।।२३।।

जीवन में यही तो हो, साधक ज्ञान को श्रेष्ठ कहे।
जब वह ज्ञान को श्रेष्ठ कहे, समझे वहाँ हम स्थित भये।।२४।।

ज्ञान तुझे आया पसंद, तू समझा मैं वही हो गया।
यही तो मन की भूल है, ज्ञान स्वरूप तू नहीं हुआ।।२५।।

ज्ञान सुनी के इक पल को, लोग मस्त हो जाते हैं।
कीर्तन महिमा गायी करी, ख़ुद को भूल भी जाते हैं।।२६।।

पल को प्रेम हो जाता है, पर भाव बदल नहीं पाते हैं।
मंदिर में वह समझें ज्ञान, जीवन में भूल ही जाते हैं।।२७।।

पुनि विपरीत उठे परिस्थिति, पुनि क्रूर बन जाते हैं।
आपुनो ही स्वभाव वह, आप बदल नहीं पाते हैं।।२८।।

गर इक बेरी भड़के कोई, उसे ज्ञान देई के समझा लो।
यह भड़कन तोरी वृथा ही है, काहे तुम मन भड़का लो।।२९।।

उस पल मान वह जायेगा, सौम्य रूप हो जायेगा।
पर गुमान वह पुनि पुनि, साधक आन्तर उठी आयेगा।।३०।।

मन समझ जो मोह गया, इक परिस्थिति में ही गया।
स्मृति याद जो आई थी, स्वभाव याद उसे आ ही गया।।३१।।

उस जाना जो मैं माने हूँ, इस पल वह है उचित नहीं।
क्षत्रिय वह उसका रण से, पिण्ड छुड़ाना उचित नहीं।।३२।।

बुद्धि बात जो मान ले, बुद्धि सत् भी पहचान ले।
क्या मन माने तोरी बात, ख़ुद को देखी तू जान ले।।३३।।

मन पाछे रह जाता है, और बुद्धि बढ़ती जाती है।
द्वंद्व भी बहु बढ़ जाते हैं, जीवन सत् बन नहीं पाती है।।३४।।

शब्द ज्ञान जो समझ पड़े, मत समझो वह तुम हो गये।
ज्ञान से ख़ुद को तोल ज़रा, तब जानो ज्ञानी नहीं भये।।३५।।

ध्यान ज्ञान में धर करी, समझो वह हो जाऊँगा।
भूल है गर यह समझ ले, मैं सत् स्वरूप हो जाऊँगा।।३६।।

ज्ञान समझ बुद्धि को हुआ, मन जीवन में नहीं चाहता है।
अरुचिकर कहीं न मिल जाये, दिनचर्या में नहीं चाहता है।।३७।।

कांक्षारहित गर प्रेम करो, परिणाम में प्रेम जो नहीं मिले।
प्रेम की जा ठुकराव मिले, तो ऐसा प्रेम मन कैसे करे।।३८।।

सब पर करुणा जो करो, निज में करुणा तुम चाहो।
तुम करुणा करो कोई ठुकराये, उस पल क्या करुणा कर पाओ।।३९।।

करुणा चाहुक प्रेम याचक, मन को सत्‌गुण कैसे भायें।
जग को कहे भगवान बनो, ख़ुद बनें यह हम न चाहें।।४०।।

मनोरुचि अरुचि जानो, बाधा बनी बनी आती है।
बुद्धि से बहु बलवान मन, पल में तब हो जाती है।।४१।।

ज्ञान अज्ञान द्वौ देखो, सत् असत् द्वौ जान लो।
असत् रूपा महाविघ्न की, तब ही तो तुझे पहचान हो।।४२।।

केवल ज्ञान से कुछ न मिले, असत् रूप निज देख लो।
अज्ञान ज्ञान में बाधा है, अज्ञान है क्या इसे देख लो।।४३।।

आसुरी वृत्ति अपनी देखी, अहं जब अपनी देख ली।
गर उसे मिटाना चाहोगे, साधना सफल तब होयेगी।।४४।।

मान की चाहना लिये हुए, पूर्ण जहान से भिड़ते हो।
मान की चाहना नहीं रहे, कांक्षारहित की तब समझो।।४५।।

तृष्णा संग तब ही मिटे, जब विषय की तृष्णा नहीं रहे।
वह मिले मिले या न मिले, तब ही हृदय से कह सके।।४६।।

उदासीन की बात कहें, निज मान्यता से संग करें।
अपने से गर आसक्त रहें, हम उदासीन कस हो सकें।।४७।।

ज्ञान में भरमाये करी, कुछ पल को बदला सा लगे।
बुद्धि ज्ञान में रमण करी, झूठ ही निज को ज्ञानी कहे।।४८।।

जब लौ निज असत् पे, ध्यान नहीं तू लगायेगा।
क्षणिक स्मृति मोह निवृत्ति, ही साधक तू पायेगा।।४९।।

नव परिस्थिति जब आये, तू वैसा पुनि हो जायेगा।
भगवान पूर्ण ज्ञान भी दे, वह तू हो नहीं पायेगा।।५०।।

समझ मना तू समझ सही, साक्षात् श्याम ने सब कहा।
क्षणिक मोह मिट ही गया, क्षणभर को मोह दूर हुआ।।५१।।

पूर्ण ज्ञान को समझ करी, केवल इतना ही तो हुआ।
वा कायरता कुछ मिट गई, युद्ध में अर्जुन युक्त हुआ।।५२।।

सो समझ मना है साधक तू, तुझे साधना अपनी करनी है।
केवल मोह का नाश नहीं, स्वरूप में चित्त तुझे धरनी है।।५३।।

स्वभाव स्मृति साधक नहीं, स्वरूप स्मृति वह चाहे है।
अज्ञान मोह आवृत किया, वा सों निवृत्ति वह चाहे है।।५४।।

जीवन में सत् क्यों भूले, को' विघ्न राह में आये हैं।
जिस मोह कारण दीखे न, उस मोह सों उठना चाहे हैं।।५५।।

स्मृति स्वरूप की वह चाहे, मोह जीवन में मिटाये है।
स्मृति उठी फिर मोह मिटे, परम पद वह पाये है।।५६।।

स्मृति से सत् जो जान लिया, चाहे वही मैं हो जाऊँ।
मोह कारण हैं जटिल विघ्न, उनसे निवृत्ति मैं पाऊँ।।५७।।

गर स्मृति निरंतर बनी रहे, मोह राहें न रोक सके।
आत्मबोध जो हो जाये, स्वरूप स्थिति को' रोक सके।।५८।।

'विजय श्री' तो दूर रही, विभूति की को' बात करे।
स्वरूप स्थिति पा ही वह ले, योगस्थित वह हो जाये।।५९।।

१.२.१९६७

तू तो सब कुछ जानो राम,
अब आके पथ दिखला दो राम..

प्रस्तुति - श्रीमती शान्ता

"श्रेय पथिक है तू मनवा, राम मिलन ही धर्म तेरा।
जग को दूर से देना निभा, मन राम चरण में रहे तेरा।।

बस वह ही प्राप्तव्य जगत में, वा पाने की चाह बढ़ा।
गर विघ्न कोई आये पथ में, तू ख़ुद चट्टान सा बढ़ता जा.."

– परम पूज्य माँ

श्रेय है कल्याणकर पथ, जो हमें ज्ञान के प्रकाश में ले जाता है और जीव को तन से उठा कर उत्तरायण की ओर अग्रसर करता है। इस पथ की ओर ले जाने वाली, सत् असत् का भेद दर्शाने वाली बुद्धि विवेक शक्ति होती है।

गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है -

'यत्तदग्रे विषमिव
परिणामेऽमृतोपमम्।
तत्सुखं सात्त्विकं
प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम्।।'

(श्रीमद्भगवद्गीता - १८/३७)

यानि जो आरम्भ में विष के समान हो, किन्तु जिसका परिणाम अमृत पूर्ण हो, वह सात्त्विक सुख है।

यह ज्ञान केवल विवेक शक्ति ही करा सकती है। इस ज्ञान से मन श्रेष्ठ होता है और बुद्धि विशिष्ठ। विवेक श्रेय पथ का ही परिणाम है। यह शास्त्रों के अवलम्बन से ही प्राप्त होता है।

प्रेय पथ में कामना पूर्ति और भौतिक सुखों की प्राप्ति की लालसा लगी रहती है। इसमें व्यक्ति की दृष्टि पसन्द-नापसन्द पर रहती है। यहाँ स्वार्थ प्रबल रहता है और दूसरे की परवाह न कर के निज को स्थापित करने का प्रयत्न किया जाता है। यहाँ सत्य का अभाव होता है और अहंकार का राज्य होता है। इस पथ पर चलता हुआ जीव नित्य-अनित्य का भेद देख और समझ ही नहीं पाता। इस कारण वह अंधकारपूर्ण रास्ते से अधोगति की ओर तीव्रता से बढ़ता है और दक्षिणायन की ओर अग्रसर होता है।

दूसरी ओर जब ज्ञान, विज्ञान का रूप धरता है, जब ज्ञान हमारी दैनिक क्रियाओं में परिणत होता है, तब वहाँ विवेक का प्रकाश होता है। वहाँ हमारी विचारधारा शास्त्र वाक् का अनुसरण करती है। वहाँ रुचि-अरुचि का एवं स्वयं को स्थापित करने के लिये कहीं स्थान ही नहीं रहता। इस पथ पर चलने वाले की लड़ाई लोगों व परिस्थितियों से नहीं होती, बल्कि अपने संग से होती है।

वह अपने आन्तर में अपनी बाह्यमुखी वृत्तियों को देखने में लगा रहता है। बाह्य परिस्थितियों से उत्पन्न प्रतिकार-झंकार राही वह अपनी 'मैं' के दर्शन करता है। वह देखता है कि इस सृष्टि का रचयिता और कर्तार तो कोई और है। जितनी जितनी उसकी दृष्टि अन्तर्मुखी होती है, उतना ही वह स्वयं से ऊपर उठता जाता है। वह तो सत् पथ का पथिक है, जो नित्य आनन्द व कल्याण की प्राप्ति में लगा रहता है।

श्रेय, भक्ति का पथ है और प्रेय आसक्ति का। श्रेय पथ मुक्ति प्रदान करता है और प्रेय अनुरक्ति। श्रेय पथ नित्य का स्वरूप दर्शाता है और प्रेय बंधन में बाँध कर जन्म-मरण के चक्र में ले जाता है। श्रेय योग का पथ है और प्रेय भोग का। श्रेय पथ वाले सत्-चित-आनन्द की ओर बढ़ते हैं और प्रेय पथिक अधोगति को प्राप्त करते हैं। श्रेय पथ का साधक तन, मन, बुद्धि से जग के साथ तदरूप हो जाता है और प्रेय पथिक अपने व्यक्तिगत जीवन को इतना महत्व देता है कि उसके समक्ष दूसरे का कोई अस्तित्व ही नहीं रहता।

श्रेय और प्रेय पर विवेचनात्मक दृष्टि डालते हुए परम पूज्य माँ से सुना कि साधक का जो भी इष्टदेव है, यानि जिस अवतारी पुरुष में उसकी श्रद्धा एवं निष्ठा है, उसके प्रमाणित जीवन को आदर्श मान कर उस के पदचिन्हों का ही उसको जीवन में अनुसरण करना है। जैसे भगवान राम और श्री कृष्ण जी ने अपने जीवन में आने वाली हर परिस्थिति को मुसकुराते हुए, शान्त व गम्भीर भाव से सामना किया, अति साधारण कर्म करते हुए विलक्षण दृष्टिकोण को परिलक्षित किया, उसी प्रकार साधक को अपने को भूल कर, अपने अस्तित्व को गौण रख कर, झुकाव और मिटाव पूर्ण कर्म करने चाहिए।

हर जीव सुख चाहता है और उस सुख की अपेक्षा अपने सम्पर्क में आने वाले अन्य व्यक्तियों से करता है। यदि वह स्वयं दूसरों की सेवा करे, उन पर अपना स्नेह लुटाये, तो वह नित्य ही तृप्त होता जायेगा। भगवान ने जीव को निहित रूप में सब गुण दिये हैं। तनो संग के परिणामस्वरूप जीव की नयनन् पुतली उलट गई है इसलिये वह स्वयं प्रेम

लुटाने की अपेक्षा दूसरों से प्रेम की भिक्षा माँगने लगा। नित्य तृप्ति श्रेय पथ वाले को प्राप्त होती है।

साधक ने अपने अन्तर्मन में बैठ कर देखना है कि उसकी बुद्धि विचलित क्यों हो गई है? तेज, क्षमा, दया, धृति, अदम्भ, अहिंसा, आर्जवता, अभय, ये सब गुण उसके भीतर ही है। इसलिए वह अपने हृदय मन्दिर में विवेक की अग्नि जला कर उस प्रकाश में उन्हें देखता है।

श्रीमती शान्ता एवं उनके घनिष्ठ मित्र

प्रेय पथ स्थूल की बात है, श्रेय पथिक सूक्ष्म गुणों का अभ्यास करता है। उसमें सर्वत्र प्रेम ही प्रेम के गुण स्फुरित होते हैं। जब वह अपने स्वार्थ को भूल कर दूसरों में प्यार बाँटता है तो वह आन्तरिक संतोष व नित्य तृप्ति प्राप्त करता है। संसार के प्रति तो उसका दृष्टिकोण स्पष्ट है - 'मैं राम का चाकर हूँ, जो मिला सो मिल गया!' वह रेखा को पूर्णतयः स्वीकार कर लेता है और मानता है, 'जेहि विधि राखे राम तेहि विधि रहिये'।

हर परिस्थिति में, चाहे वह अनुकूल हो या प्रतिकूल, साधक तो अपने गुणों को दूसरों में बाँटता है। स्थूल के हर कर्म को वह निरपेक्ष व निरासक्त हो कर करता है। उसकी लग्न केवल सत् में टिकी रहती है। उसका ज्ञातव्य व प्राप्तव्य केवल सत् ही है। मान-अपमान, हानि-लाभ, जय-पराजय में वह सम रहता है। परिणाम कैसा भी हो, उसकी वह चिन्ता नहीं करता क्योंकि वह हर पल सत्त्व में ही रहता है। उसकी दृष्टि योग युक्त हो जाती है। उसे तो केवल अपने राम को पाने की व राम के गुण अपने जीवन में उतारने की लग्न रहती है। वह तो अपना नाम मिटा कर राम नाम ही स्थापित करना चाहता है।

वह अपने मन में विशालता का अभ्यास करता है। वह सद्भावना और शास्त्र बुद्धि का आश्रय लेकर, अव्यक्त सूक्ष्म पथ पर सूक्ष्म क़दम धरता हुआ उत्तरायण की ओर बढ़ता ही जाता है।

उसके समक्ष समस्त सृष्टि भगवान की देन है, इसलिए वहाँ जीवत्व व व्यक्तित्व भाव ही नहीं रहता। जितना जितना उसमें मिटाव व झुकाव आता है, उतना उतना ही वह राम में तल्लीन हो, उन्हें ही अपने जीवन का प्रमाण मान कर, दूसरों की सेवा करता है। उसमें कर्तृत्व भाव नहीं रहता। वहाँ तो श्रेय ही श्रेय अथवा कल्याण ही कल्याण रह जाता है। परिणामस्वरूप उसके जीवन में भगवान स्वयं विचरण करने लगते हैं। ❖

जग साज शृंगार

साधक का दृष्टिकोण एक सांसारिक व्यक्ति से कितना भिन्न होता है हर स्तर पर.. इसका दर्शन हमें नित्य परम पूज्य माँ के जीवन व वाणी द्वारा मिला है। निम्नलिखित प्रवाह में इसकी झलक मिलती है!

प्रस्तुति - विष्णु प्रिया महता

संसार में इन्सान का मूल्यांकन उसके रहन-सहन और तनो रखरखाव से किया जाता है। निरन्तर भगवान के नाम में निमग्न पूज्य माँ को तो उन दिनों अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की भी सुधि नहीं रहती थी! इतना समय ही किसके पास था? दो क्षण के लिये प्रियतम भूलें, तभी तो मन यह सोचे कि क्या पहरना है? सो, जो वस्त्र हाथ में आता, यह वही पहन लेते।

जब इन्होंने देखा कि इनके मन की उस ओर रुचि ही नहीं तो सबसे सहज तरीका यही लगा कि श्वेत वस्त्र पहने जायें, जिसमें कपड़ों के चयन में समय व्यर्थ न हो।

साधक तो मर्यादा के लिए तन ढाँपता है, जग में अपनी श्रेष्ठता दिखाने के लिए बढ़िया वस्त्रों की प्रदर्शनी से उसे क्या लेना-देना? इसी प्रकार वह तो बस इसलिए अन्न ग्रहण करता है क्योंकि इस तन रूपा गाड़ी पर चढ़ उसे अपने प्रियतम से मिलने जाना है - भोजन पर ध्यान देने के लिये उसके पास समय ही कहाँ? परम पूज्य माँ का चित भी निरन्तर अपने प्रियतम में ही निमग्न था।

एक दिन बात ही बात में कहने लगे, "अपने घर की क्या महत्ता है लौकिक रूप में नहीं बल्कि वास्तविक घर.. जहाँ से लौट कर नहीं आया जाता!"

इसी का दर्शन हो रहा है निम्नलिखित पंक्तियों में -

किसी के घर जाऊँ मैं, कुछ घबराऊँ संकोच करूँ।
अपने घर आते हुए, क्योंकर किसकी सोच करूँ।।१।।

अन्य के घर तो जाते हुए, निगाहें उनकी देखे हूँ।
वस्त्र पहर बहु साज सजा, चाहें उनकी देखे हूँ।।२।।

अपने घर में या मैं हूँ, या है मेरा राम रहा।
और उसमें भी देख ले, तनिक नहीं है भेद रहा।।३।।

कभी हँस के कभी रो के, कभी मैं झूम के आती हूँ।
एको जा यह ऐसी है, मैं जग से घूम के आती हूँ।।४।।

तो वह होते हैं सामने, आप ही वह बुलाते है।
सामने जब यह तन आये, वह भी झूम ही जाते है।।५।।

निःसंकोच चली आऊँ, अपने आप से भेद है क्या?
सच है सखी अब दूजे का, भाव यहाँ पर नहीं रहा।।६।।

ऐसी अवस्था में जग वालों के लिए इस बात को समझ पाना कठिन ही नहीं, प्रायः असम्भव है। वह अपनी-अपनी मनोस्थिति के अनुकूल भक्तों पर संशय करके उनको कलंकित करने का प्रयास करते हैं, ऐसा बार-बार प्रमाणित हुआ है भक्तों के जीवन में!

किसी ने पूज्य माँ से कहा कि 'संसार में अपनी स्थापति और महिमा बनाये रखने के लिये आपको ख़ूब रोब से बन-ठन कर रहना चाहिये।' जग का साज श्रृंगार भला साधक क्या करे! वह तो अपने तन और मन को ही बन्धन मानता है और इन्हें ही त्यागना चाहता है.. वह यह भी पहचान गया कि जो लोग वस्त्र देख कर उससे प्रेम करते हैं अथवा उसे मान देते हैं, उनका प्रेम आपेक्षिक है। सच्चा प्रेम करने वाला तो अपने प्रेमास्पद को जीर्ण वस्त्रों में भी प्रेम करेगा।

सुश्री विष्णु प्रिया महता

उस प्रेम को, जो बाह्य आवरणों पर आश्रित है, लेने में साधक की तनिक भी रुचि नहीं। जग से अपमान, कलंक जो भी मिले उसे शिरोधार्य है। वह तो एकान्त में बैठ अपने प्रियतम से निरन्तर बातें करता है। उसकी सहज प्रवृत्ति जग से दूर रहने की होती है। इस बात का दर्शन हमें पूज्य माँ के जीवन में पर्याप्त रूप में मिला।

सम्भवतया साधक की इस मनो अवस्था को ही ध्यान में रखते हुए भगवान ने योगी के लक्षण बताते हुए गीता में कहा –

...'अरतिः जनसंसदि'

उन दिनों पूज्य माँ का मन बाह्य विषयों से सिमट कर पूरी तरह एकाग्र भाव से भगवान के ही चरणों में लीन था। बाह्य विषयों की ओर ध्यान देने के लिये समय ही किसके पास था? सारे धन का व्यय भी पुस्तकें एवं शास्त्र ख़रीदने और मन्दिर को सजाने में ही होता.. शास्त्र रूपा आभूषणों से जो अपने आन्तर को सुसज्जित कर रहा है, उसे तन के साज श्रृंगार से क्या लेना? संसार में मान अपमान आदि सब द्वन्द्व भी होते हैं, परन्तु साधक तो अपनी आन्तरिक मल को देख चुका है, वह मान किसका चाहे?

जग में 'लोक-कल्याण' अर्थ किये गये जग सेवा रूपी कर्मों का भी बहुत महत्व है। साधारणतया अपने को श्रेष्ठ आसन पर बिठा कर हम लोगों का सुधार करने अथवा उनको प्रशिक्षित करने का दम्भ भरते हैं, किन्तु साधक तो निरन्तर अपने आन्तर के सुधार में लगा हुआ है-

जग में भी तुम कहती हो, क्यों किस विध मैं जाती हूँ?
साज शृंगार सखी मेरी, क्यों अब भूल मैं जाती हूँ?७।।

जिसको जग शृंगार कहे, शृंगार उसे नहीं पाती हूँ।
गर इस मन की पूछो तुम, शृंखला उसको पाती हूँ।।८।।

पर वह भी बात नहीं रही, वह भी भाव नहीं रहा।
जग में कभी मैं जाती हूँ, यह भी याद अब नहीं रहा।।९।।

वस्त्र जो पहर के चरण में, राम के घर मैं आ जाऊँ।
राम को जो रे भला लगे, जिसमें दर्शन पा जाऊँ।।१०।।

इस जग की फिर बात है क्या, वही वस्त्र मैं पहरे हूँ।
अपना वस्त्र ही कोई नहीं, राम वस्त्र ही पहरे हूँ।।११।।

जग को गर वह ना भाये, कहो सखी मैं क्या करूँ?
वस्त्र ही तो उनको भाये, पर सखी नहीं 'मैं' वस्त्र वह हूँ।।१२।।

वस्त्र को गर वह चाहें हैं, जितने चाहें मैं भेज दूँ।
ठाठ बाठ गर वह चाहें, उनके घर मैं भेज दूँ।।१३।।

गर वह मुझको चाहें सखी, बाह्य वस्त्र वह ना देखें।
जीर्ण वस्त्र भी गर पहरूँ, फिर भी वह कुछ ना कहें।।१४।।

जग की क्या मैं बात करूँ, लोग दुष्ट मुझे कहते हैं।
कलंकित तन यह कर करी, तन से रुष्ट यह रहते हैं।।१५।।

ना उनका दोष ना मेरा दोष, ना राम दोष यह दोष नहीं।
महापावनी मल धोये, महा गुण में कोई दोष नहीं।।१६।।

गर कही कर दुष्ट हूँ मैं, यह जग वाले दूर रहें।
नाम मग्न मैं रहा करूँ, यह मुझको कुछ ना कहें।।१७।।

अरे यही तो मेरी चाहना है, हम भी यह ही कहते हैं।
किसी विधि इन्हें दूर करो, बार बार यह कहते हैं।।१८।।

हमने राम का नाम लिया, शंकित जग यह हो गया।
महाकृपा है राम की, कलंकित तन यह हो गया।।१९।।

बड़भागी और को' होगा, जो चरण में बैठ के गायेगा?
हर स्वास रे राम के, नाम को ही गायेगा।।२०।।

जो माँगा तूने दे दिया, इतनी कृपा और करो।
राम राम मेरे राम राम, मुझे राम राम तो कहने दो।।२१।।

साधक स्पष्ट रूप से अपने और सांसारिक लोगों के मूल्यों में दक्षिण और उत्तर का अन्तर देखकर यह जान लेता है कि इनका कभी मेल नहीं हो सकता। इस पर भी वह अपने को श्रेष्ठ अथवा दूसरों को निकृष्ट नहीं समझता।

वह इस सत्य को पहचान गया कि प्राणीमात्र तो केवल कठपुतली वत् है, जिसके सूत्रधारी राम हैं! जिसे चाहे वह जिस भी ढंग से नचा लेते हैं। इसलिए पूर्ण राम की लीला जान कर वहाँ पर सबकी पूर्ण स्वीकृति है!

(प्रार्थना शास्त्र ३ प्रार्थना न. ६८४, २१-१०-६१)

ज्यों ज्यों जानेगी निज को,
जानेगी तू कुछ भी नहीं..

परम पूज्य माँ ने इस अध्ययन में आन्तर्मुखता से गीता के ज्ञान को जीवन में धारण करते हुए जीने की राह बताई, 'यही ज्ञान है, बाक़ी सब अज्ञान है'।

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम्।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः।।

श्रीमद्भगवद्गीता-१३/७
(द्वितीय अध्ययन)

शब्दार्थ :

१. अभिमान का अभाव,
२. दम्भपूर्ण आचरण का अभाव,
३. हिंसात्मक वृति का अभाव,
४. क्षमा, सरलता, आचार्य उपासना,
५. पावनता, स्थिरता और आत्मसंयम।

भावोद्‌गार :

कौन हूँ मैं जानो साधक, यही साधना है।
राम से पूछो बार बार, बस यही आराधना है।।१।।

ज्यों ज्यों जानेगी निज को, जानेगी तू कुछ भी नहीं।
अभी न माने तू मनवा, कि तू है कुछ भी नहीं।।२।।

परोक्ष भाव सों जान लिया, जित जा देखो सब राम ही है।
मान न कर निज संग्रह का, यह संग्रह सारा राम ही है।।३।।

मान्वित बनती है जग में, पर मन में अरी तू डरती है।
मानवान तन तेरा मिटेगा, क्यों इसके पीछे पड़ती है।।४।।

बाक़ी सब जग की महिमा, इक पल छीन ले जायेगा।
मन में यह तू जानती है, यम सब बीन ले जायेगा।।५।।

इस ही कारण भय है तुमको, अरी आज ही इसको तू त्यज दे।
अमानित्वम् समर्पण है, 'मैं' को चरणन् में त्यज दे।।६।।

रस्सी जली जब राख भई, 'मैं' भी त्यों ही मिटा देना।
आंधी सम्पर्क सों राखी उड़ी, मृत्यु पे तन को लौटा देना।।७।।

अहं मिटे जब फिर भी तुझे, तन तेरा अरे दीखेगा।
यही साधना है तेरी, अरे कब लग तू सीखेगा।।८।।

कौन है वा अध्यक्षता में, यह क्षेत्र है सारा विचर रहा।
कौन है वह जिसके कारण, जग भी जग में विचर रहा।।९।।

जब जान लिया जग मैं नहीं, और यह जग मेरा नहीं।
क्या कारण है इस भाव का, स्तेन न कहलाऊँ कहीं।।१०।।

कहते हैं तूने रे तनवा, दम्भ का दामन थामा है।
राम मृत्यु को भेज रहे हैं, क्या यह भी कभी तूने जाना है।।११।।

जब जान लिया तन मैं हूँ नहीं, मान दम्भ दोनों ही गये।
सत्य की ओर स्वतः बढ़े, अज्ञान अभिमान दोनों गये।।१२।।

उस तत्व का पल पल हनन करो, यही तो हिंसा है तेरी।
जो है ही नहीं उसे हिय लगा, कहती हो वह है तेरी।।१३।।

आर्जवम्, शान्त तू होवेगा, जब जाने यह तन तू नहीं।
इतना जब तू जानेगा, फिर कहे अरे मेरा अहं नहीं।।१४।।

क्योंकर अहं मिटाऊँ मैं, ऐ राम मेरे आ तुम ही कहो।
कहाँ आचार्य पाऊँ मैं, तुम तक लाये तुम ही कहो।।१५।।

पूर्ण विश्वास श्रद्धा हुई, तो ही मन जान तू जायेगा।
गुरु अधिकार हो जायेगा, स्वतः ज्ञान को पायेगा।।१६।।

निज को तू अब जान ज़रा, और गुरु चरण में चित्त लगा।
लक्ष्य को इक पल न भुला, हर पल लक्ष्य को सीस नवा।।१७।।

यही शौचत्व है मन का, तन मन उसमें लगा देना।
स्थिरमत धैर्य धारण किये, चित्त उसमें ही लगा देना।।१८।।

स्थिर निष्ठा करी मन स्थिर भया, लक्ष्य को पा ही लेगी तू।
निज जाने जग मिट ही गया, राम भाव पा लेगी तू।।१९।।

क्षेत्रज्ञ को यूँ ही जानेगी, अन्य कोई साधन नहीं।
'मैं' को मिटा और द्वैत हटा, अन्य कोई आराधन नहीं।।२०।।

गर 'मैं' मेरी मिट जाये राम, आनन्द मग्न यह मन भये।
आनन्द में सब ही समा जाये, निज हस्ती मिटे आनन्द रहे।।२१।।

मौज आने लगे जीवन में, जो मिले मौज ही आ जाये।
मौज की चाहना कौन करे, मौज को मौज ही आ जाये।।२२।।

कोई चाहना नहीं रही, सब मौज है जो भी आ जाये।
अनुकूल भाव तो प्रिय थे, दुःख से भी मौज ही आ जाये।।२३।।

निर्भर नहीं आज़ाद हुये, जग आसरे सब छूट गये।
जग चाहना दिल में नहीं रही, स्वतः सहारे छूट गये।।२४।।

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम्।।

श्रीमद्भगवद्गीता १३/८

(द्वितीय अध्ययन)

शब्दार्थ :

१. इन्द्रियों के विषयों के प्रति वैराग्य भाव,
२. और अहंकार का भी अभाव,
३. जन्म, मृत्यु, बुढ़ापा, व्याधि इत्यादि में दुःख रूप दोषों को पुनः पुनः देखना।

भावोद्‌गारः

वस्त्र रंगे तो बाहर के, मन तो रंग में रंगा होगा।
ऐसा मन को रंग रे मनवा, मन राम के रंग से रंगा होगा।।१।।

नहीं जानूँ कोई साधन मैं, नहीं जानूँ मैं साधना।
इतना जानूँ सखी मेरी, बाह्य रंग नहीं साधना।।२।।

हठ से गर तू त्यज भी दे, मन तेरा मनवा में ही रहे।
क्या वैराग्य होगा तुझको, जब देखे तब ही तरसे।।३।।

तरस खा ऐसे मन पे, जो हर क्षण तरसा करे।
नयन राम में नाहिं टिकें जो, हर क्षण ही बरसें।।४।।

जब राम में मन टिक जायेगा, जग स्वतः तेरा छुट जायेगा।
बिन नाम के जग को त्यागेगा, ध्यान लगा मिट जायेगा।।५।।

जग को बदल लिया तूने, जग मन में ही भरा होगा।
जग को त्यज कर बन में जा, जग वहाँ भी मन में हरा होगा।।६।।

जग में रहकर तू ध्यान लगा, अपने प्रभु को हृदय में पा।
जब राम रे मन में आयेगा, जग स्वतः तेरा छुट जायेगा।।७।।

बेमन के जो छोड़ेगी, मन उसमें ही रह जायेगा।
ध्यान लगाये नाम राम में, मन राम में ही बह जायेगा।।८।।

गर विषपूर्ण तू जग करे, जग तेरे मन को न छोड़ेगा।
विषपूर्ण जो जग होगा, तू मूर्ख कह न पायेगा।।९।।

विषपूर्ण कहे विष नाहिं बने, विष घोले विष ही बने।
राम नाम अमृत पी ले, तेरा विष भी अमृत बने।।१०।।

हठ से गर जग त्याग दिया, फिर त्याग को तूने याद किया।
उस त्याग को क्यों न त्याग दिया, जिस कारण जग को याद किया।।११।।

जग त्यज कर अभिमान किया, क्या त्यागा जिसका गुमान किया।
ऐ साधक ध्यान से देख ज़रा, इस त्याग ने तुझे हैरान किया।।१२।।

दो ही दुःख हैं जहान के, इक तू ही इक जग तेरा।
मुझे ऐसा लगे यह अहं फैलाव, बढ़ा रहा है जग तेरा।।१।।

तू ही कहे यह कुछ भी नहीं, फिर भी जग में जाता है।
राग द्वेष में भय मेरे राम, यह ही तो बढ़ाता है।।२।।

काम क्रोध मोह और लोभ, अहंकार भी बढ़ता जाता है।
इन सबने मुझे लूट लिया, मेरा पतन होता जाता है।।३।।

रज बना रंगरलियाँ मना, अहं विस्तृत हो जाता है।
मूर्ख मन तू जाने न, अरे मृत्यु से मृत्यु पाता है।।४।।

विकारों में भ्रमण किये तनवा, तू अपना आप गंवाता है।
तू जाने वियोग होगा ही, पर नेह मृत्यु से लगाता है।।५।।

काहे इनसे प्रीत करे, सन्त जन यह कहते हैं।
क्षणभंगुर यह जग सारे, हर जन्म जो मिलते रहते हैं।।६।।

तू समझे अरी तेरे बिना, यह जग सारा मिट जायेगा।
गर इस क्षण तू मन चला गया, तो अंधियारा छिट जायेगा।।७।।

इतना अभिमान तू नाहिं करो, जग में भेद नहीं आयेगा।
तेरा तन यह गर मिट भी गया, वहाँ पर छेद न आयेगा।।८।।

जग के लिये तू कुछ न करे, अरे निज के लिये ही करते हो।
मृत्यु सम्मुख देख है रही, क्या उसके लिये ही करती हो।।९।।

गर मृत्यु सामने देख तू ले, कई राहें तेरी बदल ही जायेंगी।
अवश्यम्भावी को याद किये, तेरी चाहें बदल ही जायेंगी।।१०।।

गर जान लो तू कुछ पल ही रहे, तो क्या जग को तुम चाहोगे।
क्या गति जग की फिर होगी, क्या यही सोचते जावोगे।।११।।

गर कोई कहे तू धन लगा, बहु परिश्रम कर इक घर बना।
फिर मुँह फेरो नाता तोड़ो, जग के चरण उसे धर आ।।१२।।

क्या तू यह मन कर देगा, अभी तो तू नहीं मान रहा।
जन्म जन्म तूने यही किया, अरे कर कर भी नहीं जान रहा।।१३।।

कई घर महल बनाये तूने, उपवन भी वहाँ सजा दिये।
दीवाली मनाई जहान ने, तेरे तन ने दीये बुझा दिये।।१४।।

बार बार तू कमा कमा, जग में ही त्यज जाता है।
उनको दे दे सब कुछ तू, जिनसे नहीं तेरा नाता है।।१५।।

को' कर्म तेरे को' धर्म तेरे, ब्रह्मत्व भाव से देख ज़रा।
को' संग जाये को' पुनः आये, अरे तत्व भाव से देख ज़रा।।१६।।

या यूँ सोचो तू मर ही गया, फिर कौन कर्म तेरा रह गया।
मृत्यु पाछे तेरे संग चले, अरे वही धर्म तेरा रह गया।।१७।।

दुःख सुख किसको होगा तनवा, गर तन तेरा झड़ गया।
जरा व्याधि और मृत्यु क्या, तू तो पहले मर ही गया।।१८।।

जरा व्याधि का कारण मनवा, जग सों इन्द्रिय सम्पर्क ही है।
तन को अपना न मानो, यही राम अवितर्क ही है।।१९।।

विषय रसना तू त्यज न सके, यही जन्म मरण में डाले हैं।
इनसों रुचि तेरी न जाये, यही दुःख सुख देकर मारे हैं।।२०।।

प्रत्यक्ष देख लिया तूने, फिर भी दूर न हो पाये।
चाहना तीव्र तेरी नहीं, नहीं राम शरण में हो जाये।।२१।।

राम गुरु बन आयेंगे, करुणा कर तुझे उठायेंगे।
तेरी विषय रमण रुचि सारी, वह स्वयं ही आ के मिटायेंगे।।२२।।

इस पथ पर सखी वैद्य न मिले, हृदय में बुलाया जाता है।
चाहना तीव्र गर हो जाये, वह स्वयं ही चलकर आता है।।२३।।

सबकी चाहना राम मेरा, पूर्ण करता जाता है।
तीव्र कर चाहना राम की, आगे क्यों डरता जाता है।।२४।।

तन कारण तेरा जन्म गया, जड़ तन को कुछ होता नहीं।
जब काल आये वह त्यज जाये, इक आँसू वह रोता नहीं।।२५।।

तू दुःखी होये निज हनन करे, जड़ तन को कुछ न होये सखी।
इस जड़ संग्रह की अधीन हुई, चेतन तू काहे रोये सखी।।२६।।

अभी से यह तू जान ले, तू तो साधक है।
राम राम पुकारा कर, तू राम आराधक है।।२७।।

पुकार में ऐसी लीन भये, माटी तन भूल जाये सखी।
राम सुने और घर आये, माटी भी फूल हो जाये सखी।।२८।।

यह जग केवल तेरी साधना को, तीव्र करन का यंत्र ही है।
ध्यान रहे जग लग्न मिटे, यह लग्न पतन का मंत्र ही है।।२९।।

जड़ अधीन यह चेतन करे, और पीछे मन तू रोती है।
अब तो अभी से जान लिया, उठ समय तू खोती है।।३०।।

विषय स्वरूप बस विषपूर्ण, सर्पों की यह बस्ती है।
काँटों की यह है शय्या, मूढ़ों को आये मस्ती है।।१।।

हर पल काँटे चुभते हैं, अरे विष ही बढ़ता जाता है।
मदहोश हुआ तम और बढ़ा, निज पतन ही करता जाता है।।२।।

उठ नींद से तू जाग ज़रा, बेहोश रहा तो क्या होगा।
मौत खड्ग़ ले आयेगी, फिर जागेगा तो क्या होगा।।३।।

कैसे करूँ अब क्या करूँ, तू ही तो कारण पतन का।
क्या करूँ मैंने सुन तो लिया, समर्थ दे तू यत्न का।।४।।

❖ ❖ ❖

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
जून २०२१

अर्पणा के आयोजन

साधना दिवस और महासमाधि दिवस

साधना दिवस, ९ मार्च और महासमाधि दिवस १६ अप्रैल, दोनों ही दिन इस बार भी अर्पणा परिवार एवं मित्रों द्वारा परम पूज्य माँ के जीवन और दिव्य वाणी को हृदय में धारण करते हुए प्रार्थनापूर्ण श्रद्धांजलि दे कर मनाये गये, जिन्होंने हमारे जीवन को नये अर्थों से प्रज्वलित किया है। कोविड के लिए यहाँ भी निर्धारित दिशा निर्देशों को ध्यान में रखते हुए कोई भी सभा आयोजित करने की अनुमति न होने के कारण अर्पणा परिवार एवं मित्रगणों ने ज़ूम के मंच पर दिनभर एकत्रित हो कर प्रार्थनाएं, भजन और परम पूज्य माँ के सत्संग के ज्ञानवर्धक वीडियो साझे किये। आध्यात्मिक 'उर्वशी' रूपा अमृत के ज्ञान ने सभी के दिलों में प्रेम भर दिया। इस प्रकार, अर्पणा में ये महत्वपूर्ण दिन मौन श्रद्धांजलि एवं कृतज्ञता में बिताये गये।

अर्पणा की २ मंच प्रस्तुति, "केनपनिषद्" और "राजा राम" को भी ज़ूम के माध्यम से सभी को दिखाया गया, जिनका सभी ने बहुत स्वागत किया क्योंकि इन में भी परम पूज्य माँ का आध्यात्मिक संदेश ही सुदृढ़ हो रहा था।

पूज्य छोटे माँ एवं पापा जी, डॉ. जे के मेहता, की पुण्य तिथियों पर दोनों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता अर्पित की गई जिनकी हमारे जीवन में बहुत गहन भूमिका रही। उन्होंने हम सब को प्रेमपूर्वक आध्यात्मिक ज्ञान एवं शिक्षा देते हुए शास्त्रों के अर्थ हमें समझाये।

अर्पणा अस्पताल के बढ़ते क़दम

कोविड १९ की दूसरी लहर

मार्च २०२१ में आरम्भ हुई कोविड महामारी की दूसरी लहर पहली लहर की अपेक्षा बहुत बड़ी थी। पूरे देश में टीकों, अस्पताल के बिस्तरों, ऑक्सीजन सिलेंडरों एवं अन्य महत्वपूर्ण दवाइयों की कमी, अन्य अस्पतालों की भांति अर्पणा अस्तपताल में भी महसूस की जा रही थी।

अर्पणा प्रबंधन द्वारा आपातकालीन आधार पर २५ अप्रैल २०२१ को, अर्पणा अस्पताल में कोविड १९ के लिए वार्ड का संचालन शुरु किया गया। मई के अंत तक हमारे कोविड वार्ड में लगभग ९० लोगों का इलाज किया गया। अनेक अनुकम्पापूर्ण दाताओं ने अस्पताल के लिए बिस्तर, वेन्टीलेटर, ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर, कार्डिएक मॉनिटर, बाइपैप मशीन के साथ-साथ पीपीई किट, मास्क आदि उपभोग्य समाग्रियों को उपलब्ध कराने के लिए अपने हाथ बढ़ाये।

हम अपने अस्पताल के डॉक्टरों, नर्सों, अन्य नर्सिंग स्टाफ़, वार्ड बॉयज़ आदि के प्रति सम्मानपूर्ण हार्दिक कृतज्ञता प्रकट कर रहे हैं, जो कोविड रोगियों के जीवन को बचाने के लिए, अपने जीवन को जोख़िम में डाल कर दिन-रात अथक काम कर रहे हैं।

कोविड महामारी के लिए उदारतापूर्ण सहायता

भारत व विदेश से कई व्यक्तियों व संगठनों ने कोविड में राहत देने हेतु अर्पणा अस्पताल को धन व उपकरण प्रदान किये।

कोविड आउटरीच : हरियाणा के गाँवों में परीक्षण और जागरूकता शिविर

अर्पणा ग्राम सरपंचों, आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ साथ एएनएम तथा अर्पणा स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की मदद से वायरस के परीक्षण के लिए गाँवों में आउटरीच कोविड शिविर आयोजित कर रहा है।

१८-३० मई के दौरान ११ गाँवों में डॉक्टरों द्वारा १२६२ मरीज़ों की जाँच की गई और ६२४ टेस्ट किये गये।

हरियाणा की भूमि पर

कार्यशाला और होली समारोह के साथ नए एसएचजी सदस्यों का स्वागत

नए एसएचजी सदस्यों को प्रभावी प्रक्रियात्मक किट पेश करते हुए

२३ मार्च को, ७ पूर्व स्थापित स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के १३० सदस्यों ने ९ नए स्वयं सहायता समूहों के १०० सदस्यों को एसएचजी के विषय में एक कार्यशाला के साथ-साथ होली के आनन्दमय त्योहार को मनाने के लिए आमंत्रित किया।

उन्होंने नए एसएचजी सदस्यों को एसएचजी प्रक्रियाओं के महत्व और प्रभावशीलता के बारे में सूचित किया और अपने जीवन में आये बदलाव के अनुभव उनके साथ साझे किये। एसएच जी महिलाओं ने लोक नृत्य और गीतों के साथ-साथ परिवर्तन की वास्तविक जीवन की कहानी पर आधारित एक नाटक प्रस्तुत किया। होली के रंगों और रंग-बिरगें फूलों के साथ होली मनाई गई।

हरियाणा में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के अनुदान के लिए टाइड्ज़ फाउंडेशन एवं इंडिया डेवलपमेंट एण्ड रिलीफ़ फण्ड (IDRF), **यूएसए, के प्रति हमारी गहरी कृतज्ञता!**

हिमाचल की वादियाँ

सिलाई और बुनाई की कक्षाओं का अर्पणा द्वारा अप्रैल २०२१ में, दलपा और चबड़ी गाँवों में आयोजन किया गया, जिसमें ३९ महिलाओं ने भाग लिया।

सिंचाई टैंक : स्थानीय ग्रामीणों के गर्मज़ोशी से भाग लेने और अर्पणा ग्वेर्नसे द्वारा दिए गए सहयोग के साथ अप्रैल २०२१ के दौरान गाँव नागाली और दलपा में दो सिंचाई टैंकों का निर्माण किया गया।

उनकी समस्याओं को दूर करना

काकेला गाँव की सुधा कुछ वर्षों से अर्पणा द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूह की सदस्य है। महामारी और लॉकडाउन के चलते सुधा के पति की खजियार के एक होटल में नौकरी चली गई। गेहूँ की फसल तैयार थी.. इसलिए पति और पत्नी दोनों ने थ्रेशर के लिए अपने समूह से ५०,००० रुपये का ऋण लेने का फैसला किया। इस बुद्धिमत्ता से लिए गये निर्णय के कारण वह तीन गाँवों के किसानों को गेहूँ की कटाई के लिए अपने थ्रेशर को किराए पर दे कर, तालाबंदी के कठिन महीनों के दौरान १८,००० रुपये कमा पाये।

हिमाचल प्रदेश में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के अनुदान के लिए टाइड्ज़ फाउंडेशन (यूएसए) और अर्पणा ग्वेर्नसे के प्रति हमारी गहरी कृतज्ञता।

मोलरबन्द

अप्रैल २०२१ में नए शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत में, अर्पणा ने सभी बालवाटिका (प्री-नर्सरी) छात्रों को सूखा राशन और स्टेशनरी वितरित की

श्री प्रदीप विश्वास
बेटी पीहू के साथ

अर्पणा की बालवाटिका से जुड़ना

"मेरी बेटी, पीहू, लॉकडाउन से ठीक पहले अर्पणा की बालवाटिका में शामिल हुई, इसलिए मैंने सोचा कि मेरी बेटी की शिक्षा की शुरुआत सुचारू नहीं होगी।

लेकिन अर्पणा बालवाटिका के शिक्षकों, विशेषकर आनन्दी मैडम, कक्षा शिक्षिका, द्वारा किए गए प्रयासों ने मेरी आशाओं को पुनर्जीवित कर दिया। मैं अर्पणा बालवाटिका के सभी शिक्षकों को तहेदिल से धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने पाठ पढ़ाने और गृहकार्य के लिए ऑनलाइन कक्षाएं प्रदान कीं और मेरी बेटी द्वारा किए गए काम को प्रस्तुत करने के बाद तुरंत प्रतिक्रिया दी।"

पुरस्कार वितरण

प्रोत्साहन और प्रेरणा के रूप में, अर्पणा ने अपनी-अपनी कक्षाओं में सर्वोच्च रैंक हासिल करने वाले छात्रों के लिए पुरस्कार वितरित किए।

कुछ पुरस्कार प्राप्तकर्ता

अर्पणा, अवीवा (यूके), एस्सेल फाउंडेशन, नई दिल्ली, टेक्निप इंडिया, और अर्पणा कनाडा द्वारा शिक्षा कार्यक्रमों में सहायता के लिए बहुत आभारी है।

Your compassionate support sustains Arpana's Services

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.
FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001
FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002

Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to:

Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037

Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:

Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037

Send contributions in USA to:

Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive, North Bethesda, MD 20852
Mr. Jagjit Singh, AID for Indian Development, 84 Stuart Court, Los Altos, CA 94022-2249

Send contributions to Arpana Canada:

c/o Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton, Ontario L6Y 3S9, Canada
Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.

Information & Resources Office: 91-184-2390905 **Executive Director:** 91-9818600644
emails: **at@arpana.org and arct@arpana.org**

Contact person: Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9991687310
Websites: **www.arpana.org** **www.arpanaservices.org**

कृतज्ञतापूर्ण ऋण..
जिसे कभी चुकाया नहीं जा सकता!

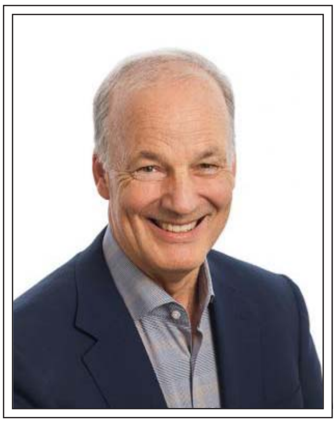

परम पूज्य माँ के दिव्य शब्दों की अनमोल देन - 'उर्वशी' के अथाह भण्डार से अनगिनत वीडियो तैयार करने में वर्षों के निरन्तर सहयोग के लिए हम, बारबरा एवं टॉम सार्जेंट को अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

इस प्रकार से संसाधित किये गये वीडियो द्वारा यह अनमोल ज्ञान, कोविड १९ के इस अत्यंत संकटपूर्ण समय में कई लोगों को जीवन शक्ति प्रदान कर रहा है। जब पिछले २ वर्षों से इस घातक बीमारी से लगभग हर परिवार ग्रसित हुआ.. जब प्रियजनों को कोविड की चपेट में देख कर अनेकों मन परेशान और व्याकुल हो उठे.. जब अकेलेपन ने अनगिनत लोगों के मनों को निराशा से भर दिया.. उस समय यह 'जीवन का ज्ञान' वास्तव में एक सुरक्षा कवच बना.. जिसने न केवल सुरक्षा ही प्रदान की बल्कि संतप्त हृदयों के संतुलन को भी बनाये रखा।

न केवल अर्पणा परिवार, बल्कि सम्पूर्ण भारत से या शायद पूरे विश्वभर से कई मित्र और सहयोगी, परम पूज्य माँ द्वारा इतने स्पष्ट रूप से बताये गये जीवन के इस अनमोल और सुखदायक ज्ञान तक पहुँच पाने में सक्षम नहीं थे.. उस समय इन सत्संगों को ज़ूम के मंच पर सांझा किया गया। इन 'जीवनदायी सत्रों' (शायद इन्हें यही नाम दिया जा सकता है) ने न केवल सभी श्रोताओं को इस वायरस की घातकता को सहन करने के लिए सक्षम बनाया, बल्कि उन्हें अपने आसपास के पीड़ित समुदायों को अपना हार्दिक समर्थन देने के लिए भी प्रेरित किया।

हम में से कई लोगों ने इस घातकपूर्ण कोविड १९ को व्यक्तिगत रूप से भी सहन किया है, और कहीं कहीं तो अस्पताल में भी भर्ती होने की आवश्यकता हो गई थी। हम में से कुछ लोगों ने तो इस भयानक महामारी में कई अपनों को भी खो दिया है। परन्तु

परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त आत्मा को अन्तरतम तक जगाने वाले ज्ञान के वीडियो से ही आंतरिक शक्ति मिल सकी.. जिन्हें ज़ूम पर शेयर किया गया। कभी किसी ने भी स्वयं को अकेला या उपेक्षित महसूस नहीं किया।

१८ महीने से भी अधिक इस अंतराल में हम अपने प्रियजनों से मिल पाने, उनके साथ चर्चा करने और जीवन के बहुमूल्य पलों को व्यक्तिगत रूप से आपस में सांझा नहीं कर पाये.. परन्तु किसी ने भी, कभी भी स्वयं को बेबस या बेसहारा महसूस नहीं किया, बल्कि हम सभी इस माध्यम से अपनी आध्यात्मिक माँ की दिव्य आभा में एक साथ रह सके.. जो बारबरा और टॉम सार्जेंट के बहुमूल्य सहयोग से ही सम्भव हो सका। हम केवल उनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ही व्यक्त कर सकते हैं.. उन्हें तो शायद इस बात का एहसास ही नहीं होगा कि उनका यह अनमोल प्रेम भरा सहयोग किस हद तक हम सब के बीच अनदेखे प्यार का एक सेतु बन गया और किस प्रकार हमारे जीवन में इतना बदलाव आया है!

अब १८ से भी अधिक महीनों का समय हो गया है.. अर्पणा के सभी विशेष अवसर ज़ूम के द्वारा ही सभी के साथ मिलकर मनाये गये। शायद ज़ूम के मंच द्वारा कई अन्य नये सदस्य भी हमारे साथ जुड़ पाये जितने व्यक्तिगत रूप से भी हमारे साथ सम्मिलित नहीं हो पाये। इतना सब कुछ टाइड्ज़ फाउंडेशन द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त होने से ही सम्भव हो सका!

टाइड्ज़ के इस अमूल्य सहयोग से बहुत सारे वीडियो तैयार किये जा चुके हैं.. व बहुत से अन्य वीडियो पर लगातार काम चल रहा है। हम इन सभी दिव्य ज्ञान से भरपूर वीडियो को अधिक से अधिक लोगों के साथ बाँटने के लिए बहुत उत्सुक हैं.. व आशा और प्रेम से भरपूर इन दिव्य शब्दों को सभी तक ले जाने के लिए तत्पर हैं।

हम हार्दिक रूप से इस उदार दम्पत्ति के सहयोग के लिए ऋणी हैं.. जिसे हम कभी भुला नहीं सकते.. जिसे कभी चुकाया भी नहीं जा सकता!

ज़ूम के मंच पर मन्दिर में परम पूज्य माँ का एक वीडियो साझा किया गया